The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 7 | July 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच बढ़ती बहुपक्षीय साझेदारी: एक विश्लेषण

रामचंद्र पालीवाल
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

भारत, संयुक्त अरब अमीरात, पश्चिम एशिया, व्यापार, रणनीतिक साझेदारी

ABSTRACT

भारत और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के बीच अच्छे द्विपक्षीय संबंध हैं और पश्चिम एशिया में भारत की हालिया सक्रिय कूटनीति के कारण यूएई एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में उभरा है। यूएई के एक वरिष्ठ अधिकारी ने भी टिप्पणी की कि भारत-यूएई साझेदारी का आधार "विश्वास का भंडार" है। इस संदर्भ में, भारत-यूएई साझेदारी की पूरी गतिशीलता और आगे के रास्ते को समझना महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध पत्र इन्हीं बातों को रेखांकित करते हुए भारत और संयुक्त अरब अमीरात संबंधों के विविध आयाम यथा, आर्थिक, राजनीतिक, रक्षात्मक और सांस्कृतिक को समझने का प्रयास करता है। यह शोध पत्र मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

परिचय:

संयुक्त अरब अमीरात पश्चिम एशियाई भाग में स्थित है और ओमान और सऊदी अरब की भूमि सीमाओं से भी घिरा हुआ है। फारस की खाड़ी, होर्मुज जलडमरूमध्य के साथ, संयुक्त अरब अमीरात को भी घेरे हुए है। इसके अलावा, दुबई, शारजाह, रास-अल-खैमा और उम्म अल-क्वैन सहित 7 क्षेत्रीय

अमीरात मौजूद हैं। तेल और प्राकृतिक गैस से होने वाला राजस्व संयुक्त अरब अमीरात के आर्थिक विकास और समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है। अबू धाबी सहित संयुक्त अरब अमीरात के अमीरात अपने विविधीकरण प्रयासों में सतर्क रहे हैं। नागरिकों द्वारा दैनिक आधार पर देखी और उपयोग की जाने वाली सेवाओं में सरकार के निवेश का स्पष्ट रूप से संयुक्त अरब अमीरात की उच्च जीवित रहने की दर से ,महत्वपूर्ण भूमिका है। संयुक्त अरब अमीरात में लोग पहले की तुलना में वर्तमान में देश के परिवहन और बुनियादी ढांचे से कहीं अधिक संतुष्ट हैं। इस प्रकार संयुक्त अरब अमीरात खाड़ी देशों का एक महत्वपूर्ण देश है।

भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच द्विपक्षीय संबंध वर्षों पुराने हैं जो 3000 ईसा पूर्व से ताल्लुक रखते हैं। प्राचीन काल में सुमेरियन सभ्यता के दौरान सिंधु घाटी सभ्यता के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध विद्यमान थे। मेसोपोटामिया सभ्यता (इराक) में मिले अभिलेखों से ज्ञात होता है कि यह हाथी दांत और कारेलियन जैसे सामानों की भारत में आपूर्ति का प्रमुख स्रोत था। इसी प्रकार संयुक्त अरब अमीरात अपने व्यापारियों के माध्यम से व्यापार मार्गों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था। अरब व्यापारी अपनी महासागरीय यात्राओं द्वारा रेशम, मसाले, सोना और चीनी मिट्टी निर्मित बर्तनों का व्यापार एशियाई देशों के साथ करते थे।

ईसा पूर्व की पहली शताब्दी के दौरान हिप्पालस नामक नाविक द्वारा लाल सागर से भारत जोड़ने वाले सीधे मार्ग की खोज की जिससे विभिन्न बंदरगाह भारतीय राज्यों से जुड़ गए जो भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच ऐतिहासिक, व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंधों को दर्शाते हैं। वर्तमान में दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक, व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंधों पर आधारित घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हुए हैं। इस क्षेत्र से खजूर और मोतियों के बदले में भारत से कपड़ों और मसाले आदि के लिए इन देशों के लोगों के बीच संपर्क और वस्तु विनिमय आधारित व्यापार सदियों से अस्तित्व में है। 1971 में यूएई फेडरेशन के अस्तित्व में आने के बाद भारत-यूएई संबंध और अधिक प्रगाढ़ हुए हैं। वर्तमान में

दोनों देश राजनीतिक आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध साझा करते हैं। साथ ही, वर्तमान में संयुक्त अरब अमीरात में 10 लाख से अधिक भारतीय निवास करते हैं जो इस देश में अब तक का सबसे बड़ा प्रवासी समूह है। भारत और संयुक्त अरब अमीरात ने वर्ष 1972 में राजनयिक संबंध स्थापित किए। अगस्त, 2015 में भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यूएई की यात्रा की जिससे दोनों देशों के बीच नई राजनीतिक साझेदारी की शुरुआत हुई और इसने द्विपक्षीय संबंधों को और अधिक बढ़ावा दिया। इसके साथ ही, 26 जनवरी 2017 में भारतीय गणतंत्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में संयुक्त अरब अमीरात के क्राउन प्रिंस नेअपनी भारत की यात्रा के दौरान एक व्यापक रणनीतिक साझेदारी बढ़ाने पर जोर दिया।

वर्ष 2018 में भारत-संयुक्त अरब अमीरात के बीच रेल क्षेत्र में तकनीकी सहयोग बढ़ाने के लिए समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए गए। अगस्त, 2021 में दोनों देशों ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए जिसके तहत भारतीय विश्वविद्यालयों के संकाय सदस्य अबू धाबी में अनुसंधान और सामाजिक विज्ञान पढ़ाने के लिए प्रतिवर्ष 6 से 10 महीने बिताएंगे। इस समझौते का उद्देश्य दोनों देशों के बीच शैक्षणिक और सांस्कृतिक संबंधों को और अधिक गहरा करना है। इसी प्रकार जनवरी 2024 में यूएई के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन जायद अल नाह्यान ने वाइब्रेंट गुजरात शिखर सम्मेलन 2024 में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया इससे दोनों देशों के बीच मजबूत संबंध स्थापित हुए।

भारत और यूएई के बीच सहयोग के स्तंभ निम्नलिखित हैं:-

आर्थिक संबंध:

संयुक्त अरब अमीरात का आर्थिक महत्व:

संयुक्त अरब अमीरात न केवल मध्य पूर्व अथवा पश्चिम एशिया के संदर्भ में बल्कि विश्व स्तर पर भी एक महत्त्वपूर्ण आर्थिक केंद्र के रूप में उभरा है। UAE की रणनीतिक स्थिति के कारण इसका उभार एक महत्त्वपूर्ण आर्थिक केंद्र के रूप में हुआ है। हाल के वर्षों में संयुक्त अरब अमीरात ने अपने 'विज़न

2021' के माध्यम से अपनी अर्थव्यवस्था में विविधता लाने और तेल पर अपनी निर्भरता को कम करने का प्रयास किया है। **विश्व व्यापार संगठन** (WTO) के एक दस्तावेज के अनुसार वर्ष 2012 से UAE की अर्थव्यवस्था के विकास का नेतृत्व गैर-हाइड्रोकार्बन क्षेत्रों ने किया है जो देश की अर्थव्यवस्था के सफल विविधीकरण को रेखांकित करता है। यद्यपि संयुक्त अरब अमीरात ने अपनी अर्थव्यवस्था को विविध बनाया है, लेकिन हाइड्रोकार्बन क्षेत्र अभी भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण बना हुआ है, जिसके बाद सेवा और विनिर्माण क्षेत्र अपना योगदान दे रहे हैं। सेवा क्षेत्र के अंतर्गत वित्तीय सेवाएँ, थोक एवं खुदरा व्यापार और रियल एस्टेट एवं व्यावसायिक सेवाएँ मुख्य योगदानकर्त्ता हैं।

व्यापार और वाणिज्य:

संयुक्त अरब अमीरात पूरे पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका क्षेत्र में भारत का शीर्ष व्यापारिक भागीदार है। पत्रकार रवि एस. झा के अनुसार, यूएई को भारतीय निर्यात भारत के वैश्विक निर्यात का 6% है। 2008-09 में, भारत संयुक्त अरब अमीरात के सबसे बड़े व्यापार भागीदार के रूप में उभरा, दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार $44.5 बिलियन से अधिक था। 2018-19 में, भारत-यूएई द्विपक्षीय व्यापार 20% से अधिक बढ़ गया और यूएई को भारत का निर्यात 7% बढ़ गया, जबकि यूएई का भारत को निर्यात 37% बढ़कर 29.78 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया।

हालाँकि भारत और संयुक्त अरब अमीरात एशिया की दो तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाएँ हैं, लेकिन उनके बीच द्विपक्षीय व्यापार क्षेत्र में आर्थिक विकास के साथ तालमेल नहीं रख पाया है, 2013 में व्यापार लगभग 67 बिलियन अमेरिकी डॉलर से घटकर 2016 में 49.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। इसलिए, फरवरी 2018 में भारतीय प्रधान मंत्री **नरेंद्र मोदी** की संयुक्त अरब अमीरात की यात्रा के दौरान, दोनों पक्षों ने अमेरिकी डॉलर की आवश्यकता को समाप्त करते हुए अपनी स्थानीय मुद्राओं में सीधे व्यापार करने के लिए एक ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिससे व्यापार को काफी बढ़ावा मिलेगा। संयुक्त अरब अमीरात को भारत के पश्चिमी तट से जोड़ने वाली एक पानी के नीचे रेल

सुरंग का प्रस्ताव 2018 में किया गया था। प्रस्तावित सुरंग पोंटूनों द्वारा समर्थित होगी और लगभग 2000 किलोमीटर लंबी होगी। वित्तीय वर्ष 2018-19 में, भारत-यूएई द्विपक्षीय व्यापार 20% से अधिक बढ़कर 59.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया। यूएई को भारत का निर्यात 7% बढ़कर 30.13 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया जबकि भारत को यूएई का निर्यात 37% बढ़कर 29.78 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया।

दुबई एक्सपो 2020 में भारत के पास चार मंजिला मंडप था, जो व्यापार के अवसरों और अपनी अनुमानित 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लिए निवेशकों को आकर्षित करने की दिशा में वैश्विक प्रयास को प्रदर्शित करता था। 190 देशों में से सबसे बड़े मंडप में से एक में भारतीय ब्रांड और रिलायंस इंडस्ट्रीज और अदानी समूह सहित बहुराष्ट्रीय कंपनियां शामिल थीं। संयुक्त अरब अमीरात के साथ जिस व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते पर बातचीत चल रही है, उससे कम से कम 100 अरब डॉलर के व्यापार को सील करने में मदद मिलने की उम्मीद थी। भारत के उभरते यूनिकॉर्न और स्टार्टअप वैश्विक निवेशकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण थे, और दुबई एक्सपो में कम से कम 13 राज्यों ने भाग लिया।

वित्तीय वर्ष 2021-22 के पहले नौ माह में भारत-UAE का कुल उत्पाद व्यापार 52.76 बिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य का रहा जो UAE को भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बनाता है। दोनों देशों द्वारा अगले पाँच वर्षों में द्विपक्षीय उत्पाद व्यापार को 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर और सेवाओं के व्यापार को 15 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया है। दो देशों के बीच व्यापार समझौता दोतरफा निवेश प्रवाह का भी प्रवर्तन होता है। भारत में संयुक्त अरब अमीरात का निवेश लगभग 11.67 बिलियन अमेरिकी डॉलर आकलित किया गया है जो इसे भारत में नौवाँ सबसे बड़ा निवेशक देश बनाता है।

इसके अलावा, कई भारतीय कंपनियों ने UAE में संयुक्त उद्यम के रूप में या उसके विशेष आर्थिक क्षेत्रों में (सीमेंट, निर्माण सामग्री, वस्त्र, इंजीनियरिंग उत्पाद, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स आदि के लिये)

अपनी विनिर्माण इकाइयाँ स्थापित की हैं। कई भारतीय कंपनियों ने पर्यटन, आतिथ्य, खानपान, स्वास्थ्य, खुदरा क्षेत्र और शिक्षा के क्षेत्र में भी निवेश किया है। भारत की संशोधित FTA रणनीति के तहत सरकार ने कम से कम छह देशों/क्षेत्रों को प्राथमिकता दी है जिसमें अंतरिम व्यापार समझौते (Early Harvest Deal/Interim Trade Agreement) के लिये UAE सूची में शीर्ष पर है। यूके, यूरोपीय संघ, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, इज़राइल और खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) के कई देश इस सूची में शामिल अन्य प्रमुख देश/क्षेत्र हैं।

अंतरिम व्यापार समझौता:

किसी मुक्त व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने से पहले दो देशों या व्यापारिक ब्लॉकों के बीच कुछ वस्तुओं के व्यापार पर टैरिफ को उदार बनाने हेतु एक अंतरिम व्यापार समझौता (Interim Trade Agreement- ITA) अथवा 'अर्ली हार्वेस्ट ट्रेड एग्रीमेंट' ((Early Harvest Trade Agreement) का उपयोग किया जाता है। अंतरिम समझौते पर सरकार का ज़ोर रणनीतिक दृष्टिकोण से प्रेरित हो सकता है ताकि न्यूनतम प्रतिबद्धताओं के साथ एक बेहतर समझौता संपन्न किया जा सके और विवादास्पद मुद्दों को बाद में हल करने का अवसर हो। हाल ही में भारत और ऑस्ट्रेलिया ने मार्च 2022 में एक ITA संपन्न करने की योजना की घोषणा की है। भारत वर्ष 2022 के पूर्वार्द्ध में यूके के साथ भी एक अंतरिम व्यापार समझौता संपन्न कर लेने की इच्छा रखता है, जबकि UAE के साथ समझौते पर हस्ताक्षर कर लिया गया है।

2023 में, संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब ब्रिक्स में शामिल हो गए। जी20 शिखर सम्मेलन 2023 में भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे या आईएमईसी पर एक समझौता ज्ञापन पर यूरोपीय संघ, भारत, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे।

भारत-संयुक्त अरब अमीरात मुक्त व्यापार समझौते के लाभ:

निर्यात में भारत की नई शक्ति के साथ UAE जैसे महत्त्वपूर्ण देश के साथ एक व्यापार समझौते का होना विकास की गति को बनाए रखने में मदद करेगा। चूँकि भारतीय विनिर्माण क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव घटित हो रहा है, भारतीय इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल और अन्य इंजीनियरिंग उत्पादों के लिये संयुक्त अरब अमीरात एक आकर्षक निर्यात बाज़ार की स्थिति रखता है। संयुक्त अरब अमीरात और भारत दोनों ही कई महत्त्वपूर्ण देशों के साथ FTAs को सक्रिय रूप से आगे बढ़ा रहे हैं, न केवल इन दोनों देशों की कंपनियाँ बल्कि अन्य भौगोलिक क्षेत्रों की बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी संयुक्त अरब अमीरात और भारत को निवेश के लिये एक आकर्षक बाज़ार के रूप में देख सकेंगी।

UAE कई क्षेत्रीय और द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौतों का एक पक्षकार/भागीदार है जिसमें खाड़ी सहयोग परिषद (Gulf Cooperation Council- GCC) के देश भी शामिल हैं। GCC के एक अंग के रूप में संयुक्त अरब अमीरात सऊदी अरब, कुवैत, बहरीन एवं ओमान के साथ मज़बूत आर्थिक संबंध रखता है और इन देशों के साथ एक साझा बाज़ार एवं कस्टम यूनियन साझा करता है। ग्रेटर अरब फ्री ट्रेड एरिया (GAFTA) समझौते के तहत संयुक्त अरब अमीरात को सऊदी अरब, कुवैत, बहरीन, क़तर, ओमान, जॉर्डन, मिस्र, इराक़, लेबनान, मोरक्को, ट्यूनीशिया, फिलिस्तीन, सीरिया, लीबिया और यमन तक मुक्त व्यापार पहुँच हासिल है।

संयुक्त अरब अमीरात के साथ मुक्त व्यापार समझौते से भारत के लिये UAE के रणनीतिक क्षेत्र में प्रवेश का मार्ग खुलेगा और अफ्रीकी बाज़ार एवं इसके विभिन्न व्यापार भागीदारों तक अपेक्षाकृत आसान पहुँच प्राप्त होगी जो भारत को विशेष रूप से हथकरघा, हस्तशिल्प, वस्त्र और फार्मा क्षेत्र में वहाँ की आपूर्ति शृंखला का अंग बनने में मदद करेगा।

UAE की टैरिफ संरचना GCC (औसत टैरिफ दर 5% लागू) के साथ जुड़ी हुई है, इसलिये गैर-टैरिफ बैरियर (Non-Tariff Barriers- NTBs) को संबोधित करने का दायरा अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है। NTBs का प्रभाव गैर-टैरिफ उपायों (Non-Tariff Measures- NTMs) के माध्यम से देखा जा सकता है

जो अधिकांशतः 'सैनिटरी एंड फाइटोसैनिटरी' (SPS) और 'टेक्निकल बैरियर्स टू ट्रेड' (TBT) द्वारा कवर किया जाता है।

SPS अधिसूचनाएँ मुख्य रूप से जीवित कुक्कुट, मांस और प्रसंस्कृत भोजन से संबंधित हैं, जबकि TBT अधिसूचनाओं का संबंध मछली, खाद्य योजक, मांस, रबर, विद्युत मशीनरी आदि से है। ये अनुपालन भारतीय निर्यातकों के लिये चुनौती पेश करते हैं। FTA समझौते को NTBs के उपयोग में अधिक पारदर्शिता और पूर्वानुमेयता लाने का प्रयास करना चाहिये ताकि उनका अनुपालन कम बोझपूर्ण बने।

ऊर्जा सहयोग:

दोनों देशों के बीच सहयोग की मुख्य आधारशिलाओं में से एक ऊर्जा सहयोग है। भारत का चौथा सबसे बड़ा कच्चा तेल आपूर्तिकर्ता अब संयुक्त अरब अमीरात है। इसने भारत को 17.49 मिलियन मीट्रिक टन कच्चा तेल उपलब्ध कराया। वर्ष 2019-2020 के लिए, दोनों देशों का कच्चे तेल का व्यापार कुल मिलाकर लगभग 18 बिलियन अमेरिकी डॉलर हुआ है। इस प्रकार का सहयोग खरीदार-विक्रेता कनेक्शन से विकसित हुआ है जिसमें "रणनीतिक साझेदारी" शामिल है, जो एक महत्वपूर्ण पहलू है।

भारत में तेल और गैस निवेश कुल 300 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक होने की उम्मीद है, क्योंकि देश ऊर्जा वस्तुओं के तीसरे सबसे बड़े उपभोक्ता की स्थिति में पहुंच गया है। संयुक्त अरब अमीरात और राज्य के बीच कर्नाटक के पादुर और मैंगलोर में रणनीतिक कच्चे तेल के भंडारण के लिए एक समझौता हुआ है।

अंतरिक्ष अन्वेषण:

भारत और यूएई संयुक्त अरब अमीरात अंतरिक्ष एजेंसी (यूएईएसए) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के सहयोग से अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में सहयोगात्मक प्रयासों में लगे हुए हैं। प्रधान मंत्री

मोदी की 2015 की अमीरात यात्रा के दौरान सहयोग को गति मिली। संयुक्त पहल में भारत के श्रीहरिकोटा में सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से नैनो-उपग्रह नायिफ़-1 का विकास और प्रक्षेपण शामिल है। इसके अलावा, अमीरात के 'रेड प्लैनेट मिशन' पर सहयोग जारी रहने की संभावना है। इसरो के पूर्व प्रमुख के. राधाकृष्ण ने अमीरात के मार्स होप प्रोब के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसे जुलाई 2020 में तनेगाशिमा अंतरिक्ष केंद्र से सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया था।

सुरक्षा संबंध:

भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच रक्षा सहयोग में 2003 से वृद्धि देखी गई है, जब संयुक्त अरब अमीरात के सशस्त्र बलों के चीफ ऑफ स्टाफ ने भारत का दौरा किया था। बाद के आदान-प्रदान के परिणामस्वरूप भारतीय वायु सेना (आईएएफ) और यूएई वायु सेना (यूएई-एएफ) को शामिल करते हुए डेजर्ट ईगल द्विपक्षीय अभ्यास की शुरुआत हुई। इन अभ्यासों ने भारत और यूएई के बीच सुरक्षा तैयारियों और समन्वय को बढ़ाने में योगदान दिया है। इसके अतिरिक्त, 2018 में आयोजित उद्घाटन संयुक्त नौसैनिक अभ्यास, गल्फ स्टार-1 ने दोनों देशों के बीच समुद्री सुरक्षा सहयोग की नींव स्थापित की। वार्षिक रक्षा वार्ता ने रक्षा सहयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, मंत्रालय स्तर पर एक संयुक्त रक्षा सहयोग समिति और मुख्यालय स्तर पर नौसेना स्टाफ वार्ता इन प्रयासों की देखरेख करती है। विशेष रूप से, संयुक्त अरब अमीरात के रक्षा मंत्रालय के एक बड़े प्रतिनिधिमंडल ने फरवरी 2019 में बेंगलुरु में एयरो इंडिया कार्यक्रम में भाग लिया। उसी वर्ष दिसंबर में, भारत के वायु सेना उप प्रमुख ने 9वें दुबई इंटरनेशनल एयर चीफ्स कॉन्फ्रेंस और एयर में एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। दिखाओ।

2014 से, भारत ने विभिन्न आतंकवाद विरोधी मुद्दों पर संयुक्त अरब अमीरात के साथ काम किया है। 4 मार्च 2018 को, भारतीय तट रक्षक और अमीरात विशेष बलों ने एक सफल ऑपरेशन में सहयोग किया, अमीराती प्रधान मंत्री शेख मोहम्मद बिन राशिद अल मकतूम द्वारा अनुरोध किया गया , और

भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अनुमोदित किया गया, ताकि लतीफा बिंट को ले जाने वाली एक नौका को रोका जा सके। मोहम्मद अल मकतूम दिसंबर 2020 में, भारतीय अधिकारियों ने संयुक्त अरब अमीरात के साथ समन्वय में दिल्ली में पाकिस्तानी आईएसआई समर्थित आतंकवादी हमले को विफल कर दिया था। गिरफ्तार आतंकियों में 2 खालिस्तानी और 3 हिजबुल मुजाहिदीन के सदस्य शामिल हैं। सेल के प्रमुख को संयुक्त अरब अमीरात में गिरफ्तार किया गया और भारत भेज दिया गया। दोनों देशों ने 4 जनवरी, 2024 को राजस्थान में एक साथ डेजर्ट साइक्लोन नाम से अपना पहला सैन्य अभ्यास आयोजित किया।

सांस्कृतिक संबंध:

1975 में, संयुक्त अरब अमीरात और भारत ने अपने सांस्कृतिक संबंधों को गहरा करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। दोनों देश विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल, सार्वजनिक स्वास्थ्य और जन मीडिया में शैक्षणिक गतिविधि सहित कला, संस्कृति और शिक्षा में सहयोग करने पर सहमत हुए। वर्तमान में संयुक्त अरब अमीरात में 30 लाख से अधिक भारतीय रहते हैं।

1960 के दशक से आप्रवासन अत्यधिक सक्रिय रहा है। पलायन करने वाले अधिकतर लोग भारत के दक्षिणी राज्यों से हैं। 2014 के बाद से, दोनों देशों ने कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं और विभिन्न क्षेत्रों में अपना सहयोग बढ़ाया है। राजनयिकों ने देशों के बीच घनिष्ठ सहयोग के लिए पीएम नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान के बीच मित्रता पर जोर दिया है। फरवरी, 2022 में दिए गए एक संयुक्त बयान में पहला विदेशी आईआईटी स्थापित करने का प्रस्ताव रखा गया था। दोनों देशों के बीच बढ़ते संबंधों के प्रतीक के रूप में अबू धाबी में एक हिंदू मंदिर प्रस्तावित और निर्माणाधीन है।

प्रवासी भारतीय समुदाय:

एक अनुमान के मुताबिक 33 लाख भारतीय विदेश में रहते हैं और हर साल 17.56 अरब डॉलर से अधिक धन वापस भेजते हैं। देश भर के भारतीय नागरिकों के लिए, संयुक्त अरब अमीरात यात्रा के लिए एक लोकप्रिय विकल्प बना हुआ है। संयुक्त अरब अमीरात में केरल के निवासियों की संख्या सबसे अधिक है।

भारत-यूएई संबंधों में प्रमुख चुनौतियां:

भारत-यूएई संबंधों में आने वाली बुनियादी चुनौतियों का संकेत नीचे दिया गया है:-

व्यावसायिक चुनौतियाँ:

संयुक्त अरब अमीरात में स्थित भारतीय कंपनियों को अस्पष्ट वाणिज्यिक नियमों, श्रम कानूनों और अमीराती व्यवसायों द्वारा पारदर्शिता की कमी के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

ईरान मुद्दा:

यूएई और ईरान के बीच टुनब्स और अबू मूसा द्वीपों पर क्षेत्रीय विवाद है। ईरान अपनी बातचीत में आक्रामक है। यह एक और ईरानी-अरब झगड़ा होगा। क्षेत्रीय संघर्ष होने पर भारत की ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार और प्रवासी संबंधों को नुकसान होगा।

प्रवासी भारतीयों की समस्याएं:

संयुक्त अरब अमीरात में काम करने वाले बड़ी संख्या में प्रतिभाशाली और अकुशल भारतीय मजदूरों या प्रवासियों को भयानक कामकाजी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है और उन्हें अन्य श्रमिकों को दी जाने वाली सुरक्षा से वंचित किया जाता है। अतः इन समस्याओं का समाधान किया जाना आवश्यक है।

निष्कर्ष:

भारत और यूएई के संबंध अति-प्राचीन होने के साथ-साथ वर्तमान में भी काफी मजबूत हैं। वर्तमान में भारत और यूएई विभिन्न क्षेत्रों यथा रणनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और रक्षा आदि क्षेत्रों में प्रमुख भागीदार और सक्रिय सहयोगी है। पश्चिम एशियाई क्षेत्र में यूएई भारत का प्रमुख भागीदार बनकर उभरा है। संयुक्त अरब अमीरात और भारत की इस रणनीतिक साझेदारी से भारत की विशेषज्ञता बढ़ेगी और भारत एक उभरती हुई ताकत के रूप में वैश्विक स्तर पर अपनी सक्रिय भूमिका निभाएगा। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में एक गैर-स्थायी सदस्य के रूप में भारतीय भागीदारी से भारत को अरब सागर में अपने सहयोगी के साथ सहयोग करने का एक बड़ा अवसर मिलेगा। इस प्रकार वर्तमान में भारत और यूएई की बहुपक्षीय साझेदारी दोनों देशों के लिए हितकारी होने के साथ-साथ अति-महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

- दीक्षित, जे. एन. (2003), इंडियाज फॉरेन पॉलिसी 1947-2003. दिल्ली: पिकस पब्लिकेशन.
- राजा मोहन, सी. (2003). क्रॉसिंग दी रुबिकन: दी शेपिंग ऑफ़ इंडियाज न्यू फॉरेन पॉलिसी. दिल्ली: पेंगुइन.
- दास, गिरधारी प्रसाद. (2006). इंडिया एंड वेस्ट एशिया ट्रेड इन एन्सिएंट टाइम्स: छठी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ईस्वी. दिल्ली: न्यू सेंचुरी पब्लिकेशंस.
- राजमोनी, वेणु. (2008). इंडिया एंड दी यूएई: इन सेलिब्रेशन ऑफ़ अ लेजेंड्री फ्रैंडशिप. लंदन: लूस्टर.
- वाधवानी, राजेश. (2013). इंडिया एंड यूएई: इकोनॉमिक रिलेशन. दिल्ली: रितु पब्लिकेशन.
- जाकिर हुसैन (2013) इंडिया एंड दी यूनाइटेड अरब अमीरात: ग्रोइंग कम्प्लीमेंट्रीज इन दी 21 सेंचुरी" दी यूआईपी जर्नल ऑफ़ इंटरनेशनल रिलेशन्स जनवरी

- महमूद, फ़जल. (2014,संपा.). फॉरेन पॉलिसी ऑफ़ इंडिया एंड वेस्ट एशिया: चैंज एंड कंटीन्यूटी. दिल्ली: न्यू सेंचुरी पब्लिकेशंस.
- रॉय, मीना सिंह. (2014). इमर्जिंग ट्रेंड्स इन वेस्ट एशिया: रीजनल एंड ग्लोबल इम्प्लिकेशन्स. दिल्ली: पेंटागन प्रेस.
- बर्मन अरूप (2016) इंडिया-यूएई इन्वेस्टमेंट एंड ट्रेड कनेक्शन: प्रैग्मैटिज्म ओवर दी हुप्ला एंड हाइपस डिप्लोमेसी एंड बियॉन्ड स्पेशल रिपोर्ट यूएई-इंडिया दिसंबर पेज 36-39
- गुप्ता, रंजीत. (2017). पश्चिम एशिया के साथ भारत के संबंध: एक नए युग की शुरुआत. वाशिंगटन डी.सी.: मिडिल ईस्ट इंस्टिट्यूट.
- गुएराइच, विलियम. (2017). 'दी यूएई: जियोपॉलिटिक्स, मॉडेरनिटी एंड ट्रेडिशन'. न्यूयॉर्क: आईबी टॉरिस.
- सीकरी, राजीव. (2017). भारत की विदेश नीति: चुनौती और रणनीति. दिल्ली: सेज भाषा.
- गांगुली, सुमित. (2018). भारत की विदेश नीति: पुनरावलोकन एवं संभावनाएं. दिल्ली: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- मिश्रा, राजेश. (2022). भारतीय विदेश नीति: भूमंडलीकरण के दौर में. दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान.